

डॉ. रॉबर्ट चिशोल्म, 1 और 2 सैमुअल, सत्र 2

1 शमूएल 2

© 2024 रॉबर्ट चिशोल्म और टेड हिल्डेब्रांट

यह डॉ. रॉबर्ट चिशोल्म प्रथम और द्वितीय सैमुअल की पुस्तकों पर अपने शिक्षण में हैं। यह सत्र 2, 1 शमूएल 2:12-36 है। अनादर घातक हो सकता है।

इस अगले पाठ में, हम प्रथम शमूएल अध्याय 2 श्लोक 12 से 36 को देखने जा रहे हैं। आपको याद होगा कि प्रथम शमूएल अध्याय 1 के पहले भाग में और फिर अध्याय 2 और श्लोक 11 के माध्यम से हम हन्ना को देख रहे थे और हमने देखा कि हन्ना की कहानी में मुख्य विषय यह है कि प्रभु अपने वफादार अनुयायियों को सही ठहराते हैं। हन्ना प्रभु के प्रति वफादार रही।

बच्चा पैदा करने के लिए उसने सारी पूजा-अर्चना नहीं की। वह प्रभु के प्रति वफादार रही। उसने अपने उत्पीड़न के बीच में प्रभु की ओर देखा और प्रभु ने उसे सही ठहराया।

उसने उसे एक पुत्र दिया और उसने इसके लिए प्रभु को धन्यवाद दिया और यह भी देखा कि उसका अनुभव इस बात का पूर्वाभास देता है कि प्रभु इस्राएल के लिए क्या करेंगे। और निःसंदेह, जैसे-जैसे हम पुस्तक के माध्यम से आगे बढ़ेंगे हम देखेंगे कि प्रभु इस्राएल के लिए वही कर रहे हैं जो उन्होंने हन्ना के लिए किया था। उनका बेटा सैमुअल इसका बेहद अहम हिस्सा बनने वाला है।

वह कई मायनों में मूसा जैसा भविष्यवक्ता बनने जा रहा है जैसा कि व्यवस्थाविवरण में भविष्यवाणी की गई थी। वह उस तरह के नेता बनने जा रहे हैं जिसकी इजराइल को जरूरत है। हम यहाँ अध्याय 2 के शेष भाग में जो देखने जा रहे हैं वह यह है कि एली और उसके बेटे कहानी में अधिक प्रमुख होने जा रहे हैं और उनके और सैमुअल के बीच एक विरोधाभास होने जा रहा है।

मैं इस विशेष खंड का शीर्षक देता हूँ, अनादर घातक हो सकता है, और यही एली और उसके बेटे खोजने जा रहे हैं। इस खंड का मुख्य विचार मैं इस प्रकार बताऊंगा, प्रभु उन लोगों का विरोध करते हैं जो उनका तिरस्कार करते हैं और वह उन लोगों से अपना वादा किया हुआ आशीर्वाद वापस ले लेते हैं जो उनका तिरस्कार करते हैं। तो, इससे पहले, हम प्रभु को अपने वफादार अनुयायी हन्ना को सही ठहराते हुए देखते हैं।

यहां हम उसे उन लोगों के लिए दंड की घोषणा करते हुए देखते हैं जो उसके साथ अपमानजनक व्यवहार करते हैं और वह उनसे अपना आशीर्वाद वापस लेने जा रहा है। और जब हम अध्याय 2 और उसके बाद 3 और 4 पर काम करेंगे तो वास्तव में यह स्पष्ट विरोधाभास होने वाला है। अध्याय 2 के श्लोक 12 से 17 में एली के पुत्रों पर ध्यान केंद्रित किया जाएगा। फिर हम सैमुअल पर वापस जा रहे हैं और वास्तव में हन्ना इस बिंदु पर मंच छोड़ने जा रही है लेकिन हम एक बार और पढ़ने जा रहे हैं शमूएल के साथ हन्ना के संबंध और शमूएल के विकास के बारे में और फिर हम एली के बेटों पर वापस आएं।

संक्षेप में, हम फिर शमूएल का विवरण प्राप्त करेंगे लेकिन फिर श्लोक 27 से 36 में ध्यान एली और उसके पुत्रों पर होगा। परमेश्वर का एक आदमी प्रकट होता है और घोषणा करता है कि परमेश्वर एली और उसके पुत्रों पर न्याय लाने जा रहा है। और फिर हम अध्याय 3 में जाते हैं और हम एली और उसके बेटों पर आने वाले फैसले के विपरीत शमूएल को भविष्यवक्ता के रूप में बुलाते हुए देखते हैं।

तो, हम यहां आगे-पीछे जाएंगे और इस विरोधाभास को देखेंगे। और सैमुअल एक अन्य कारण से पुस्तक में एक महत्वपूर्ण पात्र है। वह वही होगा जो शाऊल को राजत्व से हटा देगा और वही होगा जो दाऊद का राजा के रूप में अभिषेक करेगा।

इसलिए, इस खंड में लेखक जो काम कर रहा है उनमें से एक, प्रभु के भविष्यवक्ता के रूप में सैमुअल की विश्वसनीयता स्थापित करना है क्योंकि पूरी पुस्तक प्राचीन इज़राइली पाठकों को यह प्रदर्शित करने के लिए डिज़ाइन की गई है कि शाऊल को वास्तव में भगवान ने अस्वीकार कर दिया था और डेविड है चुना हुआ राजा। कुछ तनाव था। कुछ लोग ऐसे थे जो शाऊल के प्रति वफादार थे और इसलिए पुस्तक आंशिक रूप से यह प्रदर्शित करने का प्रयास कर रही है कि डेविड को चुना गया है, शाऊल को नहीं।

आपको शाऊल को अपने पीछे रखना होगा। उसे अस्वीकार कर दिया गया। भविष्य डेविड और उसके वंश का है और इसलिए प्रभु के भविष्यवक्ता के रूप में सैमुअल की विश्वसनीयता स्थापित करना बहुत महत्वपूर्ण है क्योंकि वह इन सब में महत्वपूर्ण भूमिका निभाने वाला है।

वह वही है जो शाऊल के पास आएगा और कहेगा कि प्रभु ने तुम्हें अस्वीकार कर दिया है और वह वही है जो दाऊद के पास आएगा और कहेगा कि तुम नए राजा हो। तो यह उसका हिस्सा है जो यहाँ चल रहा है। इसके अलावा, एली और उसके बेटों के साथ जो होता है वह शाऊल और उसके बेटों के साथ क्या होगा इसकी भविष्यवाणी करता है।

कुछ लोगों ने कहा होगा, अच्छा, शाऊल को यहोवा ने चुन लिया है। ठीक है, सैमुअल को पढ़ने के बाद आप वापस आ सकते हैं और कह सकते हैं कि एली भी ऐसा ही था, लेकिन इससे उसकी रक्षा नहीं हुई। परमेश्वर एली के माध्यम से महान कार्य करना चाहता था लेकिन जब एली और उसके पुत्रों ने उसके साथ तिरस्कारपूर्ण व्यवहार किया तो परमेश्वर ने उन्हें अस्वीकार कर दिया और उसने शाऊल के साथ भी वैसा ही किया।

तो, एली और उसके बेटों और शाऊल के बीच एक तरह का साहित्यिक संबंध है और हन्ना, सैमुअल और डेविड के बीच एक साहित्यिक संबंध है। तो, उन प्रारंभिक टिप्पणियों को ध्यान में रखते हुए आइए परिच्छेद में उतरें। याद रखें एल्काना रामा को अपने घर चला गया और शमूएल याजक एली के अधीन यहोवा के सामने सेवा कर रहा है।

हम वहीं से निकल पड़े। और फिर श्लोक 12 में, हमारे पास कहानी में एक नए प्रकरण की शुरुआत है। इसका संकेत हिब्रू पाठ में विषय के पहले आने से मिलता है।

यह उन तरीकों में से एक है जिनसे वे पैराग्राफ विभाजन और नए एपिसोड और इस तरह की चीजों का संकेत देते हैं। और एली के बेटे जिनका अध्याय एक की शुरुआत में संक्षेप में उल्लेख किया गया था, अब केंद्र चरण बन गए हैं। तो, हम स्पष्ट रूप से एक अलग प्रकरण में हैं।

एली के पुत्र दुष्ट मनुष्य थे। लेखक इधर-उधर नहीं घूमता। और वह शब्द है, बलिया, जिस पर हमने अध्याय एक में टिप्पणी की थी जहां हन्ना ने एली से कहा था जब उसने उस पर शराबी होने का आरोप लगाया था, मुझे एक बेकार, दुष्ट महिला, बलिया की बेटी मत समझो।

मेरी श्रद्धांजलि उस तरह की नहीं है। लेकिन अब वर्णनकर्ता एली के बेटों पर टिप्पणी कर रहा है और बेकार शब्द उन पर लागू होता है। तो, एली, हमेशा की तरह भ्रमित होकर, सोचा कि हन्ना उस तरह का व्यक्ति था जबकि वास्तव में उसके अपने बेटे उस तरह के व्यक्ति थे।

और इसलिए, एली के पुत्र दुष्ट व्यक्ति थे। उनके मन में प्रभु के प्रति कोई सम्मान नहीं था। और इसका शाब्दिक अर्थ यह है कि वे प्रभु को नहीं जानते थे।

परन्तु वे यहोवा को जानते थे। वे प्रभु के बारे में जानते थे। वे जानते थे कि प्रभु कौन था।

आखिरकार, वे उसके पवित्रस्थान में सेवा कर रहे थे। इसलिए, वे जानते थे कि प्रभु कौन था। लेकिन कभी-कभी हिब्रू में जब यह 'जानना' शब्द का उपयोग करता है, तो वह इसे किसी के अधिकार को पहचानने के अर्थ में उपयोग करता है।

और इसलिए, उन्होंने प्रभु के अधिकार को नहीं पहचाना। हो सकता है कि उन्होंने इस पर दिखावा किया हो, लेकिन हम इस बारे में बात नहीं कर रहे हैं। अपने कार्यों से, उन्होंने प्रदर्शित किया कि वे प्रभु को इस अर्थ में नहीं जानते थे कि वे उन्हें अपने ऊपर अधिकार रखने के रूप में नहीं पहचानते थे।

अतः एली के पुत्र दुष्ट मनुष्य थे। उनके मन में प्रभु के प्रति कोई सम्मान नहीं था। वे वास्तव में भगवान को उस अर्थ में नहीं जानते थे जिस अर्थ में आपको भगवान को जानना चाहिए।

यिर्मयाह 22 में याद रखें, वर्तमान राजा लोगों पर अत्याचार कर रहा है और प्रभु अपने भविष्यवक्ता के माध्यम से उसका सामना करते हैं और वह कहते हैं, तुम्हें योशियाह की तरह बनने की जरूरत है जिसने गरीबों और जरूरतमंदों की परवाह की। और क्या मुझे जानने का यही मतलब नहीं है? योशियाह प्रभु को इस अर्थ में जानता था कि वह समझता था कि प्रभु की संप्रभुता के तहत प्रभु के राजा के रूप में उसका काम गरीबों और जरूरतमंदों की देखभाल करना था। यह कानून में था और उसने प्रभु के अधिकार को पहचाना, उसने कानून में कही गई बातों का पालन किया और प्रदर्शित किया कि वह वास्तव में प्रभु को जानता था।

अब लोगों के साथ याजकों की यह प्रथा थी कि जब भी कोई बलि चढ़ाता था और जब मांस पकाया जाता था, तो याजक का सेवक हाथ में तीन-आयामी कांटा लेकर आता था और वह उसे तवे में डाल देता था या केतली या कड़ाही या बर्तन और कांटा जो कुछ भी उठाता था, पुजारी उसे अपने लिए ले लेता था। और आप सोच सकते हैं, अच्छा, इसमें गलत क्या है? इन बेचारे पुजारियों

को खाने को मिल गया है। खैर, यदि आप कानून पर वापस जाएं, तो ऐसे कई अनुच्छेद हैं जो उन हिस्सों के बारे में बात करते हैं जो पुजारी के लिए थे।

और पुजारी को यह अधिकार नहीं था कि वह साथ आए और जो कुछ भी वे चाहते थे उसे ले जाए। और मुझे यकीन है कि उन्होंने यह पता लगा लिया होगा कि जानवर के सर्वोत्तम अंग कैसे प्राप्त किये जा सकते हैं। तो, वे वास्तव में यहाँ जो कर रहे हैं वह यह है कि वे प्रभु से चोरी कर रहे हैं।

उन्होंने शीलो में आने वाले सभी इस्राएलियों के साथ इसी प्रकार व्यवहार किया। परन्तु चर्बी जलाने से पहिले भी, और स्मरण करो, कि जब तुम यहोवा के लिथे बलिदान लाते थे, तब यहोवा चर्बी को ले लेता है। और आप सोच सकते हैं, क्यों? जब मैं मांस खाता हूँ तो मुझे वसा नहीं चाहिए।

लेकिन इसे मांस का सबसे अच्छा हिस्सा माना जाता था। और इसलिए, यह प्रभु का था। परन्तु चर्बी जलाने के पहिले और यहोवा को उसका उचित भाग देने से पहिले याजक का सेवक आकर बलि चढ़ानेवाले से कहता, याजक को भूनने के लिये कुछ मांस दे।

वह आपसे उबला हुआ मांस नहीं, बल्कि कच्चा ही स्वीकार करेगा। और यदि उस पुरूष ने उस से कहा, पहिले चर्बी तो जल जाए, पहिले यहोवा का भाग निपट जाए, और तब जो चाहे ले लेना। तब नौकर जवाब देता, नहीं, अभी दे दो।

यदि तुम ऐसा नहीं करोगे तो मैं इसे बलपूर्वक ले लूँगा। और इसलिए जाहिरा तौर पर वे क्या कर रहे थे जब मांस पहली बार उनके पास कच्चा आया था, वे प्रभु को अपना हिस्सा मिलने से पहिले ही उसमें से एक हिस्से की मांग करेंगे। और फिर जब मांस उबल रहा था, तो वे अपने तीन-आयामी कांटे के साथ फिर से आये और और मांस ले लिया।

इसलिए, वे स्वयं को, मानो, उस मांस को खा रहे हैं जो भगवान को अर्पित किया जाता है। हां, उन्हें उचित समय पर अपना उचित हिस्सा मिलना था, लेकिन वे यह सब गलत कर रहे थे। और प्रभु के दृष्टिकोण से, इसने उन्हें दुष्ट बना दिया।

जवानों का यह पाप यहोवा की दृष्टि में बहुत बड़ा था, क्योंकि वे यहोवा की भेंट का तिरस्कार कर रहे थे। और तुम्हें यह विचार महापाप का है। मूर्तिपूजा और व्यभिचार के लिए इस तरह के शब्दों का प्रयोग अन्यत्र किया जाता है, आप इसे संस्कृति में भी देखते हैं।

लेकिन प्रभु की दृष्टि में अतिरिक्त अत्यंत महान स्थान यही है। तो, आप सतही तौर पर सोच सकते हैं कि थोड़ा अधिक मांस लेना मुझे बहुत गंभीर नहीं लगता है, लेकिन नहीं, वे कानून में निर्धारित विशिष्ट आदेशों का उल्लंघन कर रहे थे। वे लालची थे।

वे लालची लोग थे। और प्रभु के दृष्टिकोण से, यह प्रभु के सामने बहुत बड़ा पाप था। वे उसकी भेंट को तुच्छ समझ रहे थे।

अब हमें इनमें से एक स्विच मिलता है। हम पद 18 में सैमुअल पर स्विच करने जा रहे हैं। लेकिन जहां तक सैमुअल की बात है, वह सनी का एपोद, याजकीय वस्त्र पहने हुए एक लड़का था, जो प्रभु के सामने सेवा कर रहा था।

हर साल, उसकी माँ उसके लिए एक छोटा सा वस्त्र बनाती थी। आप जानते हैं, जब बच्चे बड़े हो रहे होते हैं, तो उन्हें नये कपड़े देने पड़ते हैं। हर स्कूल वर्ष में, उनके पास नए कपड़े होने चाहिए जो अब उन पर फिट हों क्योंकि वे लम्बे हैं।

और इसलिए जब उसकी माँ वार्षिक बलिदान चढ़ाने के लिए अपने पति के साथ जाती थी, तो वह एक छोटा सा वस्त्र लेकर आती थी और उसे उसके पास ले जाती थी। तो, हन्ना हर साल सैमुअल से मिलती है। और एली ने एल्काना और उसकी पत्नी को यह कहकर आशीर्वाद दिया, कि यहोवा तुम्हें इस स्त्री के द्वारा सन्तान दे, कि तुम उस स्त्री का स्थान ले लो, जिसके लिये इस ने प्रार्थना करके यहोवा को सौंप दिया था।

और फिर वे घर चले जायेंगे। और यहोवा हन्ना पर दयालु था। वह गर्भवती हुई और उसने तीन बेटों और दो बेटियों को जन्म दिया।

इस बीच, बालक शमूअल प्रभु की उपस्थिति में बड़ा हुआ। और यहां कुछ सूक्ष्म चीजें चल रही हैं। जैसा कि हम जानते हैं, जैसे-जैसे कहानी आगे बढ़ती है, आप इसे दूसरी बार देखते हैं।

हन्ना के और भी बच्चे हो रहे हैं। सैमुअल के अलावा उसके तीन और बेटे होंगे। हन्ना के विपरीत एली अपने दो बेटों को खोने जा रहा है।

और शमूअल यहोवा के साम्हने बड़ा हो रहा है। और हिब्रू में, वह क्रिया गैडोल है, बड़ा बनने के लिए। वह बढ़ रहा है।

यह वही जड़ है जिसका उपयोग एली के पुत्रों के पाप के लिए किया गया था। उनका पाप गदोला था। यह बहुत अच्छा था।

ये वे सूक्ष्मताएँ हैं जो आप हिब्रू में उन शब्दों के साथ देखते हैं जो जुड़े हुए हैं जिन्हें अनुवादक आसानी से प्रतिबिंबित नहीं कर सकते क्योंकि वे एक विशेष संदर्भ में किसी विशेष शब्द के साथ सर्वश्रेष्ठ करने की कोशिश कर रहे हैं। इसलिए, हिब्रू पाठ को देखते हुए, यदि आप हिब्रू का अध्ययन करने के इच्छुक हैं, तो मैं कहूंगा कि इसे करें। आप और देखें।

यह पाठ को एचडी में देखने जैसा है, जैसा कि आप जानते हैं, रंगीन एचडी, पुराने काले और सफेद या उसके जैसा कुछ के विपरीत। तो, सैमुअल बढ़ रहा है। वह प्रभु की सेवा कर रहा है और एली के पुत्रों के विपरीत है।

अब हम वापस स्विच करते हैं। तो, हमारे पास स्पष्ट रूप से ये विरोधाभास हैं जो विकसित हो गए हैं और पाठ बस बदल जाता है और इस बिंदु पर एली के नाम का उल्लेख करता है। अब, एली ने, जो बहुत बूढ़ा था, सुना कि उसके पुत्र सारे इस्राएल के साथ क्या कर रहे हैं।

और अब यहाँ एक नया है. और वे मिलापवाले तम्बू के द्वार पर सेवा करनेवाली स्त्रियोंके संग सोए। वह अभिव्यक्ति, वह कथन हमारे सभी पाठ्य साक्षियों में नहीं है।

और इसलिए, कुछ लोग तर्क देंगे कि इसे बाद में जोड़ा गया था। इसका उल्लेख पहले नहीं किया गया है. इसका जिक्र बाद में नहीं किया गया है.

लेकिन मुझे लगता है कि यह मौलिक है. इसे यहाँ क्यों जोड़ा गया है? खैर, यह यह दिखाने के लिए एक अतिरिक्त टिप्पणी है कि वे कितने घटिया थे। और यह विषयगत रूप से हमने जो पहले देखा है उससे जुड़ता है।

वे लालची लोग हैं जो लालच और वासना से भरे हुए हैं। वे ढेर सारा खाना चाहते हैं. वे महिलाओं के साथ सोना चाहते हैं.

और वे इसे वहीं कर रहे हैं। माफ़ करें। वे इसे वहीं मिलन तंबू में कर रहे हैं।

और इसलिथे उस ने उन से कहा, तुम ऐसा काम क्यों करते हो? मैं सब लोगों से तुम्हारे इन दुष्ट कामों के विषय में सुनता हूँ। नहीं, मेरे बेटों, यह अच्छी रिपोर्ट नहीं है। और यह एक अल्पकथन है।

अच्छी रिपोर्ट नहीं है. उसने बुरे काम तो कहे, परन्तु कोई अच्छी खबर नहीं जो मैं प्रभु के लोगों के बीच फैलते हुए सुन रहा हूँ। और फिर वह उनसे तर्क करता है।

यदि कोई मनुष्य दूसरे मनुष्य के विरुद्ध पाप करता है, तो परमेश्वर उसके लिये मध्यस्थता कर सकता है। दूसरे शब्दों में, भगवान आ सकते हैं और मध्यस्थ के रूप में कार्य कर सकते हैं और सुनिश्चित कर सकते हैं कि न्याय मिले। परन्तु यदि कोई मनुष्य यहोवा के विरुद्ध पाप करे, तो उसकी मध्यस्थता कौन करेगा? जब आप भगवान के खिलाफ पाप करते हैं और वह आपके खिलाफ फैसला लाता है, तो भगवान के खिलाफ आपके बचाव वकील के रूप में कौन खड़ा होगा? आप बहुत खतरनाक स्थिति में हैं.

और इसलिए, ऐसा लगता है मानो एली यहां सही काम कर रही है। वह अपने बेटों को डांट रहा है. वह अपने बेटों को सही कर रहा है.

लेकिन जैसा कि हम देखेंगे, प्रभु के दृष्टिकोण से यह पर्याप्त नहीं है। एली अधिकार की स्थिति में है, और वह इसे समाप्त कर सकता था। वह वैसे भी अपने बेटों को गोली मार सकता था।

लेकिन वह बस उन्हें डांटता है। और प्रभु के दृष्टिकोण से, यह पर्याप्त नहीं है। और यह कोई अच्छा काम नहीं करता.

हालाँकि, उनके बेटों ने अपने पिता की डांट नहीं सुनी। और इस बिंदु पर, आप सोच रहे होंगे, चार। चार।

वे नीच लोग थे जो तर्क की बात नहीं सुनते थे। लेकिन नहीं, यह दिलचस्प है. क्योंकि प्रभु की इच्छा उन्हें मार डालने की थी।

आप सोच रहे होंगे कि उन्होंने अपने पिता की बात क्यों नहीं मानी? उसके लिए बहुत देर हो चुकी थी. और यह एक डरावना मार्ग है, क्योंकि हम यहां जो देखते हैं वह यह है कि ये लोग बहुत दूर चले गए थे। उन्होंने प्रभु के साथ सीमा पार कर ली थी, और प्रभु ने निर्णय लिया था, मैं उन्हें मार डालूंगा।

मैं उन्हें खेल के मैदान से बाहर करने जा रहा हूँ।' यदि एली ऐसा नहीं करेगा, तो मैं करूँगा। और इसलिए, आप इसे पुराने नियम में कहीं और देखते हैं, जहां प्रभु एक ऐसे बिंदु पर आते हैं जहां वह निर्णय लेते हैं कि बहुत देर हो चुकी है।

राजाओं में रहबियाम के साथ भी यही होता है। वह सुलैमान का पुत्र है जो नया राजा बना है, और सुलैमान उत्तरी कार्यबल के साथ थोड़ा अत्याचारी था, और वे रहबियाम के पास आए, और वे कहते हैं, तुम्हारे पिता ने वास्तव में हम पर अत्याचार किया था, और इसलिए हम चाहते हैं कि तुम अधिक निष्पक्ष रहो और हमारा बोझ थोड़ा हल्का करने के लिए. और वह दो अलग-अलग पक्षों की बात सुनता है।

पुराने साथी कहते हैं कि आपको उनकी बात के अनुसार चलना होगा। लेकिन उसके छोटे दोस्त उससे कहते हैं, नहीं, तुम बस उन्हें बताओ कि तुम अपने पिता से भी अधिक सख्त हो जाओगे। वह यही करता है.

और आप सोच सकते हैं, वाह, यह क्या मूर्खतापूर्ण काम है। लेकिन तब हमें पता चला कि यह प्रभु की ओर से है, क्योंकि प्रभु ने सुलैमान के खिलाफ उसकी मूर्तिपूजा के लिए न्याय लागू करने का फैसला किया है, और यह उसमें पहला कदम है। और इसलिए, प्रभु कभी-कभी इसमें कदम रखेंगे।

बहुत देर हो चुकी है। और वह सख्त हो जायेगा. वह लोगों को, रोमियों 1, उनके पाप के हवाले कर देगा।

और यहाँ वही हुआ है. दुःख की बात है कि एली ने अपने बेटों को जल्द ही डाँटा नहीं। उन्हें उन्हें पद से हटा देना चाहिए था.

उन्होंने ऐसा नहीं किया, और इसलिए हम यहां एक ऐसे बिंदु पर आ गए हैं जहां भगवान उन्हें तर्क सुनने की भी अनुमति नहीं देंगे। यदि वे ऐसा करने के लिए इच्छुक होते, और मुझे विश्वास नहीं है कि वे ऐसा करने के लिए इच्छुक होते, लेकिन यदि वे ऐसा करने के लिए इच्छुक होते, तब भी, भगवान ने हस्तक्षेप किया होता और कहा होता, नहीं, अब बहुत देर हो चुकी है। आप फिरौन की कठोरता में इसी प्रकार की बात देखते हैं।

फिरौन ने कई बार परमेश्वर के संदेश को अस्वीकार कर दिया, और उसके ऐसा करने के बाद परमेश्वर उसे कठोर बना देगा। और लड़का, अब सैमुअल के पास वापस आ गया है, स्विच बैक देखें, और लड़का सैमुअल कद में बढ़ता गया और प्रभु और मनुष्यों के पक्ष में बढ़ता गया। और इसलिए, वह बढ़ रहा है, और वह बढ़ रहा है, और टोव शब्द का प्रयोग उनके पक्ष में, उसकी अच्छाई के लिए किया जाता है।

एली, उसके बेटे ऐसे काम कर रहे हैं जो हिब्रू में लो टोवा हैं। वे अच्छे नहीं हैं, लेकिन शमूएल, प्रभु की दृष्टि में, अच्छाई की विशेषता रखता है, और इसलिए उस पर प्रभु की कृपा है, और इसलिए दोनों पक्षों के बीच फिर से यह विरोधाभास है। अब श्लोक 27, अब ईश्वर का एक आदमी, एक वाक्यांश जो इस विशेष मामले में एक भविष्यवक्ता के लिए उपयोग किया जाता है, ईश्वर का एक आदमी एली के पास आया और उससे कहा, यह वही है जो भगवान कहते हैं, क्या मैंने खुद को तुम्हारे पिता के सामने स्पष्ट रूप से प्रकट नहीं किया था घर जब वे फिरौन के अधीन मिस्र में थे? और इस विशेष मामले में, पिता के घराने, यह हारून है, हारून जिसे याजक होने के लिये बुलाया गया था, और मैं ने तेरे पिता हारून को इस्राएल के सब गोत्रों में से अपना याजक होने के लिये, और मेरी वेदी तक जाने के लिये चुन लिया, मेरे साम्हने धूप जलाना, और एपोद पहिनाना।

हम बाद में शमूएल में एपोद क्या था इसके बारे में बात करेंगे। पुजारियों ने इसका उपयोग ईश्वर की इच्छा को समझने के लिए किया, लेकिन हम इसके बारे में तब और अधिक बात करेंगे जब यह कहानी में अधिक प्रमुख भूमिका निभाएगा। मैं ने तेरे पिता के घराने को इस्राएलियोंके द्वारा किए हुए सारे हव्य भी दे दिए, इस प्रकार मैं ने तेरे पिता हारून को याजक का एक बड़ा पद दिया, कि वह मेरे और प्रजा के बीच मध्यस्थ का काम करे।

वे वेदी के पास जा रहे हैं, वे धूप जला रहे हैं, और मैंने उनके लिए भोजन का प्रबंध किया है। मैंने इस्राएलियों द्वारा अग्नि में दी गई सारी भेंटें उन्हें दे दीं। तुम मेरे बलिदान और भेंट का, जो मैं ने अपने निवास के लिये ठहराया है, तिरस्कार क्यों करते हो? तुम मेरी प्रजा इस्राएल की ओर से चढ़ाए हुए उत्तम अन्नों से अपना पेट पालकर अपने बेटों का मुझ से अधिक आदर क्यों करते हो? तो, यह बहुत दिलचस्प है.

हो सकता है कि आप उन पहले छंदों पर वापस जाना चाहें और एली के लिए बचाव पेश करना चाहें। खैर, उन्होंने बात तो की। उनके बेटों ने जो किया, वह उन्हें मंजूर नहीं था।

उसने उनसे कुछ कहा, लेकिन प्रभु के दृष्टिकोण से, कार्य शब्दों से अधिक ज़ोर से बोलते हैं, और यह हमारे लिए याद रखना बहुत महत्वपूर्ण है क्योंकि हमारे पास एक अच्छे खेल के बारे में बात करने की प्रवृत्ति है। हम चर्च में आते हैं, हम प्रभु की आराधना करते हैं, हम सभी सही बातें कहते हैं, हम प्रार्थना करते हैं, हम गीत गाते हैं, लेकिन प्रभु हमसे आज्ञाकारिता देखना चाहते हैं, और वह वास्तव में जो देखना चाहते थे, मुझे लगता है, वह एली से था इस संबंध में आज्ञाकारिता. वह चाहता था कि उसका पुजारी उन विद्रोही पुत्रों को पद से हटा दे, और उसने ऐसा नहीं किया।

वास्तव में, जब वे उसके पास उस मांस में से कुछ लाए जो उन्होंने उन लोगों से लिया था जो यहोवा के थे, तो उसने उसे खा लिया। इसलिए भले ही वे जो कर रहे थे उसे वह स्वीकार नहीं

करता था, फिर भी उसने एक तरह से इसमें भाग लिया। उसने उन्हें पद से नहीं हटाया, और जाहिर तौर पर उसने उस मांस में से कुछ खा लिया, और इसलिए प्रभु उसे इस पर बुला रहा है, और वह कह रहा है, तुमने मेरे बलिदान और भेंट का तिरस्कार किया है।

आप मुझसे अधिक अपने बेटों का सम्मान कर रहे हैं, और कभी-कभी यह माता-पिता के लिए कठिन होता है। तुम्हें पता है, यीशु ने कहा था कि तुम्हें नफरत करनी होगी। मुझे लगता है कि वह अतिशयोक्तिपूर्ण भाषा का उपयोग कर रहा था, लेकिन ऐसी स्थिति हो सकती है जहां आपको अपने परिवार से नफरत करनी पड़े और मुझे चुनना पड़े, और इसलिए एली, इस मामले में, दोनों तरह से ऐसा नहीं कर सकती।

यह या तो प्रभु था या उसके पुत्र, और यद्यपि उसने उन्हें डांटा, फिर भी वह बहुत दूर तक नहीं जा सका, और जहां तक प्रभु का संबंध है, वह अपने पुत्रों के साथ है। इसलिये, यहोवा, इस्राएल का परमेश्वर, घोषणा करता है, मैंने वादा किया था, सचमुच अभी कहा, कि तुम्हारा घराना और तुम्हारे पिता का घराना हमेशा मेरे सामने सेवा करेगा, लेकिन अब, यहोवा घोषणा करता है, यह मुझसे दूर है। जो मेरा आदर करते हैं, मैं उनका आदर करूंगा, परन्तु जो मेरा तिरस्कार करते हैं, उनका तिरस्कार किया जाएगा, और इसलिए प्रभु अनिवार्य रूप से कह रहे हैं, मैं लोगों के साथ वैसा ही व्यवहार करता हूं जैसा वे मेरे साथ करते हैं।

यदि तुम मेरे प्रति तिरस्कार दिखाते हो, मेरा तिरस्कार करते हो, तो तुम उसे मुझसे वापस पाओगे। यदि तुम मेरा आदर करोगे तो मैं तुम्हारा आदर करूंगा। यही वह सिद्धांत है जिसका मैं पालन करूंगा, और आपने पुजारी के रूप में सेवा करने का अपना अधिकार खो दिया है।

वह समय आ रहा है, कि मैं तेरी शक्ति और तेरे पिता के घराने की शक्ति घटा दूंगा, और तेरे वंश में कोई बूढ़ा न रहेगा। तो जाहिर तौर पर, वे पुजारी के रूप में बने रहेंगे, लेकिन उन्हें परिवार की उस पंक्ति में एक समस्या होने वाली है। वे अकाल मृत्यु को प्राप्त होंगे, और तुम मेरे निवास में संकट देखोगे।

यद्यपि इस्राएल का भला किया जाएगा, तौभी तुम्हारे वंश में कभी कोई बूढ़ा न होगा। इस संस्कृति में वृद्धावस्था को ईश्वर के आशीर्वाद के रूप में देखा जाता है, और ईश्वरीय आशीर्वाद का वह चिन्ह मौजूद नहीं होगा। इसके विपरीत, जो लोग देख रहे हैं उनके लिए यह स्पष्ट हो जाएगा कि यह परिवार वंश भगवान का पक्षधर नहीं है।

तुममें से हर एक जिसे मैं अपनी वेदी से अलग नहीं करूंगा, केवल अपनी आंखों को आंसुओं से अंधा करने और अपने हृदय को दुःखी करने के लिए बख्शा जाएगा, और तुम्हारे सभी वंशज जीवन के चरम पर ही मर जाएंगे। ऐसा लगता है कि वह ऐसे बोल रहा है मानो एली इस सब के लिए आसपास ही रहेगा, लेकिन दुख की बात है, वह बूढ़ा हो गया है। वह इसके लिए मौजूद नहीं रहेगा, लेकिन बाइबल में, वे अक्सर इस तरह से बात करेंगे।

माता-पिता और संतान के बीच, पूर्वज और वंशजों के बीच घनिष्ठ संबंध होता है। उदाहरण के लिए, उत्पत्ति 28 में, प्रभु याकूब को एक वचन दे रहे हैं कि उसकी संतानें सभी दिशाओं में कैसे

फैलेंगी, और वह कहते हैं कि तुम उत्तर, दक्षिण, पूर्व, पश्चिम तक फैलोगे। ठीक है, जैकब आसपास नहीं रहेगा, लेकिन यह उसकी संतानों के माध्यम से किया जाएगा, और इसलिए प्रभु एली का वर्णन करने के लिए यहां उस तरह की भाषा का उपयोग कर रहे हैं।

यदि आप इसे देखने के लिए आसपास होते, तो यह आपकी आंखों में आंसू ला देता। तो, आपके वंश में यही होने वाला है, और आपके दो बेटों, होप्पी और फिनीस के साथ जो होगा, वह आपके लिए एक संकेत होगा। वे दोनों एक ही दिन मरेंगे, इसलिए एक प्रारंभिक संकेत होगा कि यह सब होने वाला है, और होफ़नी और फिनीस एक ही दिन मरने वाले हैं, और यह बहुत जल्दी होने वाला है।

अध्याय चार, मैं अपने लिए एक वफ़ादार पुजारी खड़ा करूंगा जो मेरे दिल और दिमाग में जो होगा उसके अनुसार काम करेगा। मैं उसका घर दृढ़ करूंगा, और वह मेरे अभिषिक्त के साम्हने सदा सेवा टहल करेगा। और आप सोच रहे होंगे, क्या वह सैमुअल है? और कुछ लोगों का तर्क है कि इसकी प्रारंभिक पूर्ति हुई थी, लेकिन हम किंग्स के एक अंश से जानते हैं कि यह उस स्थिति का जिक्र कर रहा है जो सुलैमान के समय में हुई थी, जब सुलैमान ने एली के वंशज को पदावनत कर दिया था, और उसने सादोक या सादोक को ऊपर उठाया था। पौरोहित्य, और वह एली की वंशावली से भिन्न एरोनिक वंशावली थी, और इसलिए वह काफी समय बाद पूरी हुई।

एली का घर पदावनत कर दिया गया। वे अब इस्राएल में प्राथमिक याजक नहीं थे, और सादोक के घराने को उस विशेष मामले में पदोन्नत किया गया था। तब तुम्हारे वंश में बचे हुए सभी लोग आकर चाँदी के एक टुकड़े और रोटी की एक परत के लिए उसके सामने झुकेंगे और विनती करेंगे, मुझे किसी पुरोहिती पद पर नियुक्त करें ताकि मुझे खाने के लिए भोजन मिल सके।

और इस प्रकार, तुम्हारे वंशज अपमानित होंगे। वे अब प्राथमिक पुरोहित वर्ग नहीं रहेंगे। यह एक अलग पंक्ति होने जा रही है, और आपके वंशज वास्तव में आकर भोजन की भीख माँगने वाले हैं।

और आप सोच रहे होंगे कि ये थोड़ा कठोर तो लगता है, लेकिन कितना उचित है। आप इसे अक्सर परमेश्वर के निर्णयों के साथ देखते हैं। सज़ा अपराध के अनुरूप है।

ईश्वर के निर्णयों में वह है जिसे हम काव्यात्मक न्याय कहते हैं। वे अनुचित तरीके से लोगों से लिया गया वह मांस खा रहे थे जो भगवान का था, और इसलिए यह ऐसा है जैसे भगवान कह रहे हों, ठीक है, तुम खुद को वह मांस खाना चाहते हो जो मेरा है। एक दिन ऐसा आएगा जब आपके पास खाने के लिए मुश्किल से ही कुछ बचेगा और आपको भोजन के लिए भीख माँगनी पड़ेगी।

तो, यह एक बहुत ही दुखद कहानी है। सैमुअल के व्यापक संदर्भ में इसका बहुत महत्व है, जैसा कि हमने कहा, क्योंकि हमारे पास यहां एक पुजारी है जिसे हमेशा के लिए पद देने का वादा किया गया था, और आप सोच सकते हैं, ठीक है, अगर भगवान का वचन सच है, तो वह इससे कैसे पीछे हट सकता है? अब वह कह रहे हैं कि यह हमेशा के लिए नहीं रहेगा। यहाँ क्या चल रहा है? क्या ईश्वर अपने वादे के प्रति विश्वासघाती है? और वह उससे छीन लिया जाएगा।

शाऊल के साथ भी यही होने वाला है। यहोवा शाऊल से प्रतिज्ञा करने जा रहा है। वास्तव में, हम देखेंगे कि वह शाऊल से कहने जा रहा है, मैं तुम्हें एक अनन्त राजवंश देता, जो सदैव कायम रहे, परन्तु तुमने पाप किया, और इसलिए मैं उसे छीन रहा हूँ।

तो, आपको वहां भी यही समस्या है। क्या चल रहा है? खैर, जब हम पुराने नियम में प्रभु के वादों के साथ काम कर रहे हैं, तो हमें यह महसूस करने की आवश्यकता है कि वे सभी बिना शर्त या अपरिवर्तनीय नहीं हैं। प्रभु लोगों के साथ इस प्रकार की वाचाएँ और वादे करते हैं।

मुझे लगता है कि उन्होंने अब्राहम के साथ एक फिल्म बनाई है। जब तक आप अध्याय 22 तक पहुँचते हैं, मुझे लगता है कि प्रभु इब्राहीम से किए गए अपने वादे को अपरिवर्तनीय मानते हैं। वह उस पर पीछे नहीं हटने वाला है।

मुझे लगता है कि वह 2 शमूएल 7 में डेविड के साथ एक वादा करता है। आप शायद कुछ अन्य लोगों से उतने परिचित नहीं हैं, एक वादा वह नंबर्स में फिनीस नाम के एक पुजारी के साथ करता है, और इसके अलावा, वह इनमें से एक वादा करता है कालेब. और इसलिए ऐसे समय होते हैं जब प्रभु एक अटल वादा करते हैं। मैं बिना शर्त कहने में झिझकता हूँ क्योंकि इन वादों के साथ हमेशा शर्तें जुड़ी होती हैं।

यदि वे वास्तव में आशीर्वाद का पूरी तरह से अनुभव करना चाहते हैं, तो उन्हें कुछ मानकों पर खरा उतरना होगा। आप इसे डेविडिक वाचा के 2 शमूएल 7 में देखते हैं। यदि तुम्हारा पुत्र मुझ से विश्वासघात करेगा और मेरी आज्ञा नहीं मानेगा, तो मुझे उसे दण्ड देना होगा।

तो, एक तरह की शर्त है, लेकिन मैं वादा नहीं छीनूंगा। आपके पास वह वंशवादी वादा हमेशा रहेगा। परन्तु परमेश्वर सभी वादों को उसी प्रकार पूरा नहीं करता।

कभी-कभी वे सशर्त होते हैं. यदि यदि वहां है, तो स्पष्ट रूप से वे सशर्त हैं। प्रभु कभी-कभी कहेंगे, यदि तुम मेरी बात मानोगे, तो यही होगा।

लेकिन इस तरह के विभिन्न अंशों को देखने से हमें जो पता चलता है, कभी-कभी वादे को ऐसे कहा जा सकता है जैसे कि यह बिना किसी शर्त के हो। आप सोच सकते हैं कि देखने में यह कोई शर्त नहीं थी, लेकिन फिर भी, यह अंतर्निहित रूप से सशर्त है। और हम इस प्रकार की चीजों के उदाहरण देखते हैं, जहाँ प्रभु को दया आएगी।

वह अपना मन बदल लेगा. वह ऐसा कहेगा, परन्तु चूँकि उसके लोग अवज्ञाकारी रहे हैं, इसलिए वह उससे पीछे हट जाता है और अपनी कार्यशैली बदल देता है। इस पर क्लासिक मार्ग यिर्मयाह अध्याय 18 में है, और मुझे लगता है कि हमें वहां जाने में समय लगेगा क्योंकि यह वास्तव में यह समझने में महत्वपूर्ण मार्ग है कि यहां क्या हो रहा है।

इस मामले में, प्रभु अपने लोगों, इस्राएल के साथ व्यवहार कर रहा है, और वह उन्हें अपने पास वापस आने के लिए प्रोत्साहित करना चाहता है। वह उन्हें चेतावनी देना चाहता है. और यह वह

वचन है जो यहोवा की ओर से यिर्मयाह के पास पहुंचा, यिर्मयाह 18:1, और फिर पद 2, कुम्हार के घर जा, और वहां मैं तुझे अपना सन्देश दूंगा।

इसलिए, मैं कुम्हार के घर गया। कुम्हार मिट्टी के बर्तन बना रहा है। तुम्हें पता है, यह उसका काम है।

वह मिट्टी से चीजें बना रहा है। और मैंने उसे चाक चलाते हुए देखा, लेकिन जिस बर्तन को वह मिट्टी से आकार दे रहा था वह उसके हाथों में खराब हो गया था। तो, कुम्हार ने इसे दूसरे बर्तन में बना दिया।

तो, उसके मन में एक प्रकार का बर्तन था, लेकिन मिट्टी में कुछ गड़बड़ थी। यह लचीला नहीं था। वहां एक समस्या थी।

यह खराब हो गया . और इसलिए उसने फैसला किया कि इसे फेंकने के बजाय, वह इसे ले जाएगा और इसे एक अलग डिजाइन के साथ एक अलग प्रकार के बर्तन में आकार देगा, जो उसे सबसे अच्छा दिखाई देगा। तब यहोवा का यह वचन मेरे पास पहुंचा, हे इस्राएल के घराने, क्या मैं तुम्हारे साथ वैसा नहीं कर सकता जैसा यह कुम्हार करता है, यहोवा की यही वाणी है, जैसे मिट्टी कुम्हार के हाथ में रहती है, वैसे ही हे इस्राएल के घराने, तुम भी मेरे हाथ में हो। .

यदि किसी भी समय मैं घोषणा करता हूं कि किसी राष्ट्र या राज्य को उखाड़ फेंकना, तोड़ना और नष्ट कर देना है, और यदि मैं उस राष्ट्र को अपनी बुराई के लिए पश्चाताप करने की चेतावनी देता हूं, तो मैं नरम हो जाऊंगा और उस पर वह विपत्ति नहीं डालूंगा जिसकी मैंने योजना बनाई थी। इसलिए प्रभु कह रहे हैं कि ऐसे समय होंगे जब मैं किसी राष्ट्र पर न्याय की घोषणा करूंगा, लेकिन यदि वह राष्ट्र जिसे मैं चेतावनी देता हूं वह अपनी बुराई के लिए पश्चाताप करता है, तो मैं नरम हो जाऊंगा और उस पर वह विपत्ति नहीं डालूंगा जिसकी मैंने योजना बनाई थी। दूसरे शब्दों में, आपको यहाँ यह आभास होता है कि आखिरी चीज़ जो प्रभु करना चाहते हैं वह है किसी का न्याय करना।

वह चाहता है कि वे पश्चाताप करें और उसके साथ उचित संबंध रखें, लेकिन वह भविष्यवक्ता को इस आशा के साथ उन्हें चेतावनी देने के लिए भेजता है कि वे पश्चाताप करेंगे और ताकि उसे उनका न्याय न करना पड़े। ऐसा प्रतीत होता है कि हम यहां क्या देख रहे हैं और यह वही है जो हम पुराने नियम में कई बार देखते हैं, जैसे कि योना में। योना नीनवे में आता है, 40 दिन और और नीनवे नष्ट हो जाएगा।

आप इसके साथ क्या करने जा रहे हैं? उन्होंने यह नहीं कहा कि, किसी शर्त का कोई संकेत नहीं है। अब आप कह सकते हैं, शायद 40 दिन अवसर की एक खिड़की है। यदि प्रभु हमें नष्ट करने के लिए ही प्रतिबद्ध होते, तो शायद वह ऐसा ही करते।

तो 40 दिन की प्रतीक्षा अवधि क्यों? आप इसके साथ दोनों तरह से जा सकते हैं। नीनवे का राजा नहीं जानता कि क्या करे। वास्तव में, उनका कहना है कि हम स्मार्ट चीज़ करने जा रहे हैं।

इस भविष्यवक्ता ने हमें चेतावनी दी है और इसलिए हम पश्चाताप करने जा रहे हैं और हम जानवरों को पश्चाताप में शामिल करने जा रहे हैं। हम उन्हें भोजन से वंचित करने जा रहे हैं और जब उन्हें भोजन नहीं मिलेगा तो वे मिमियाना शुरू कर देंगे और जो भी आवाजें निकालेंगे वही करने लगेंगे। हम सभी पश्चाताप करने जा रहे हैं क्योंकि, वह कहते हैं, कौन जानता है, हिब्रू में मि योदे, कौन जानता है, भगवान नरम पड़ जाएं।

तुम्हें पता है, वह हमारा पश्चाताप देख सकता है। वह इसके बारे में बिल्कुल भी निश्चित नहीं है। और फिर, निस्संदेह, पाठ हमें अध्याय तीन के अंत में बताता है, प्रभु ने देखा कि उन्होंने क्या किया और प्रभु वास्तव में निर्णय भेजने से पीछे हट गए।

और फिर अध्याय चार में, योना इस बात से खुश नहीं है। वह शुरू से ही नीनवे पुनर्ग्रहण परियोजना का हिस्सा नहीं बनना चाहता था। वह उसका हिस्सा नहीं बनना चाहते थे।

वह जाना नहीं चाहता था। यदि आप सोच रहे हैं कि योना क्यों भाग गया, तो ऐसा इसलिए नहीं था क्योंकि वह डरता था या ऐसा कुछ था। वो इसका हिस्सा नहीं बनना चाहते थे।

उसने नहीं सोचा कि नीनवे के लोग पश्चाताप करने के अवसर के पात्र हैं। अशूरियों ने प्राचीन निकट पूर्वी दुनिया भर में लोगों के साथ कुछ बहुत ही बुरे काम किए थे और 800 के दशक में उन्होंने इज़राइल के साथ भी कुछ बहुत ही बुरे काम किए थे। और इसलिए, योना अशूरियों के प्रति घृणा से भर गया था और मुझे लगता है कि अगर मैं उस समय रहने वाला एक इज़राइली होता तो मैं भी नफरत से भर जाता।

वह इसका हिस्सा नहीं बनना चाहता था और इसलिए अध्याय चार में वह परेशान है। वह वास्तव में चिढ़ गया है। वह पागल है और कहता है, मुझे पता था कि ऐसा होगा क्योंकि तुम इस तरह के भगवान हो।

आप सहनशील हैं और आप धैर्यवान हैं और आप आम तौर पर उस फैसले से पीछे हट जाते हैं जिसकी आपने धमकी दी है। आपने ऐसा किया है। और मुझे पता था कि यह यहां होगा और मैं इसके बारे में बहुत परेशान हूँ।

और इसलिए, एक ऐसा मामला है जहां संदेश स्पष्ट रूप से सशर्त नहीं था। नीनवे का राजा किसी भी तरह से निश्चित नहीं था, लेकिन हमें पता चला कि संदेश वास्तव में सशर्त था। पुराने नियम में अक्सर ऐसा ही होता है।

वास्तव में, मुझे लगता है कि अक्सर ऐसा ही होता है। और इसीलिए आपके पास कुछ अंश हैं जहां भगवान कहते हैं, मैं ऐसा आदमी नहीं हूँ कि अपना मन बदलूंगा। वह, 1 शमूएल 15 में, वह शाऊल से यह कहने जा रहा है।

बहुत देर हो चुकी है। ऐसे समय होते हैं जब भगवान कहते हैं, बस इतना ही, और वह एक ऐसा बयान जारी करते हैं जो अपरिवर्तनीय होता है। ऐसा ही होने वाला है, लेकिन हमेशा ऐसा नहीं होता है।

और इसलिए वह यहां बस यही बात कह रहा है। और एली के साथ और बाद में शाऊल के साथ भी यही हो रहा था। प्रभु ने एक वादा किया था, लेकिन यह एक अटल वादा नहीं था।

वफ़ादार बने रहने की उनकी ज़िम्मेदारी थी। निहितार्थ यह था, यदि उन्होंने ऐसा नहीं किया, तो प्रभु उस वादे को हटा देंगे। और इसका मतलब यह नहीं है कि वह बेवफा है।

कुछ लोग इसे देखेंगे और कहेंगे, ठीक है, यदि प्रभु इस तरह नरम पड़ सकते हैं, अपना मन बदल सकते हैं, तो वह अपरिवर्तनीय कैसे हो सकते हैं? क्योंकि हम धर्मशास्त्र में पुष्टि करते हैं कि ईश्वर अपरिवर्तनीय है। वह अपरिवर्तनीय है। खैर, वह वहां बदल रहा है।

लेकिन आइए ईश्वर की अपरिवर्तनीयता और उसके गुणों के बारे में सोचें। ईश्वर प्रेम का ईश्वर है और ईश्वर दया और कृपा का ईश्वर है। और इसलिए, वह अपरिवर्तनीय रूप से वही है।

यही उसका स्वभाव है। इसलिए, उसे रिश्तों में दया और अनुग्रह दिखाने के लिए किसी पर घोषित फैसले को भेजने से पीछे हटने में सक्षम और इच्छुक होना होगा। इसलिए, यदि आप अपरिवर्तनीयता के सिद्धांत के बारे में ठीक से सोचते हैं, तो आप समझते हैं कि यह उस सिद्धांत का खंडन नहीं करता है।

इसका मतलब यह नहीं है कि ईश्वर बेवफा है। ईश्वर कोई आसमान का कंप्यूटर नहीं है जो बिना शर्त आदेश उगल देता है। नहीं, वह लोगों के साथ रिश्ते में है।

और उस रिश्ते में, वह इस उम्मीद में चेतावनी देगा कि वे वापस आएं। इसके अलावा, श्लोक नौ, और यदि किसी अन्य समय मैं घोषणा करता हूं कि एक राष्ट्र या राज्य का निर्माण और रोपण किया जाना है, और यदि वह मेरी दृष्टि में बुराई करता है और मेरी बात नहीं मानता है, तो मैं उस भलाई पर पुनर्विचार करूंगा जो मैंने करने का इरादा किया था यह। यह दूसरे तरीके से भी काम करता है।

भगवान साथ आएं और आशीर्वाद का वादा करेंगे। और, ठीक है, उसे इस पर पुनर्विचार करना पड़ सकता है। आपको इसका एक अच्छा उदाहरण जोएल, अध्याय दो में मिलता है, जहां एक वादा है कि प्रभु आज से अपने लोगों को हमेशा आशीर्वाद देंगे।

खैर, ऐसा नहीं हुआ। जोएल के बाद प्रभु को कई बार अपने लोगों का न्याय करना पड़ा, और क्योंकि वह वादा सशर्त था। इसलिये अब यहूदा के लोगों और यरूशलेम में रहनेवालों से कहो, यहोवा यही कहता है।

देख, मैं तेरे लिये विपत्ति की तैयारी कर रहा हूं, और तेरे विरुद्ध युक्ति रच रहा हूं। इसलिये तुम में से हर एक अपनी बुरी चाल से फिरो, और अपने चालचलन और कामों में सुधार करो। लेकिन वे जवाब देंगे, इसका कोई फायदा नहीं है।

हम अपनी योजनाओं को जारी रखेंगे. हममें से प्रत्येक अपने बुरे हृदय की जिद का पालन करेगा। और इसलिए, यिर्मयाह के दिन में, लोगों ने संदेश को अस्वीकार कर दिया और प्रभु को उनका न्याय करना पड़ा।

आप इसे मत्ती 23 में यीशु के साथ भी देखते हैं, जब वह यरूशलेम को देख रहा है और वह कहता है, हे, यरूशलेम, यरूशलेम, मैंने कितनी बार इच्छा की है, ग्रीक में, साथी, मैंने तुम्हें मुर्गी की माँ की तरह अपने पास लाने की इच्छा की है उसकी लड़कियाँ, लेकिन तुम इच्छुक नहीं हो, साथी, वही क्रिया, तुम इच्छुक नहीं हो। और इसलिए, निर्णय आ रहा है। प्रभु की आदर्श इच्छा, उनकी पूर्व इच्छा, उनकी पूर्व इच्छा यह है कि वे पश्चाताप करें।

लेकिन जब वे ऐसा नहीं करते हैं, तो वह एक न्यायी भगवान है, और वह इस बुराई की निरंतरता को बर्दाश्त नहीं कर सकता है। और इसलिए, उसकी परिणामी इच्छा, योजना बी, जैसा कि यह थी, उसकी आदर्श इच्छा से कम, लेकिन कुछ ऐसा करना होगा, जो कि काम करेगा। और यीशु के समय में इज़राइल के साथ ऐसा हुआ था, और इज़राइल के साथ ऐसा कई बार हुआ था पुराने नियम में.

उसने एली और शाऊल से वादे किए थे, और वह उन्हें आशीर्वाद देना चाहता था, लेकिन जब उन्होंने उसकी बात नहीं मानी, तो उसे बस उस वादे को हटाना पड़ा और पीछे हटना पड़ा। और यही वह यहाँ कह रहा है। इसलिए, यह वास्तव में भगवान की अपने वचन के प्रति निष्ठा या अपने लोगों के प्रति उनकी प्रतिबद्धता का उल्लंघन नहीं करता है।

और यह डरावना है क्योंकि भगवान वही चाहते हैं जो हमारे लिए सबसे अच्छा है, लेकिन कभी-कभी हम हार जाते हैं। हम उन आशीषों को गँवा देते हैं क्योंकि हम आज्ञाकारी होने से इनकार करते हैं। प्रभु पाप का प्रतिफल नहीं देंगे।

और इसलिए यह एक बहुत ही गंभीर वृत्तांत है। और इसके बाद के अध्यायों में हम जो देखने जा रहे हैं, अध्याय तीन में, प्रभु शमूएल को अपने भविष्यवक्ता के रूप में बुलाने जा रहे हैं। तो, प्रभु, एली और उसके पुत्रों की मृत्यु का मतलब यह नहीं है कि इस्राएल को प्रभु द्वारा अस्वीकार किया जा रहा है।

प्रभु अभी भी अपने लोगों के साथ काम करने जा रहे हैं। वह एक नया नेता, शमूएल, मूसा जैसा भविष्यवक्ता खड़ा करने जा रहा है, और वह उसे खड़ा करने जा रहा है। और फिर अध्याय चार में, हम एली और उसके बेटों के पतन को देखने जा रहे हैं, और यह संकेत कि वे एक ही दिन में मरने वाले हैं, वह घटित होने वाला है।

और इसलिए सैमुअल और एली और उसके बेटों के बीच विरोधाभास अगले दो अध्यायों में जारी रहेगा, जिसे हम अगले पाठ में देखेंगे।

यह डॉ. रॉबर्ट चिशोल्म प्रथम और द्वितीय सैमुअल की पुस्तकों पर अपने शिक्षण में हैं। यह सत्र 2, 1 शमूएल 2:12-36 है। अनादर घातक हो सकता है।